विचार बिन्दु

मैं ही आग हूँ, मैं ही कूड़ा-करकट। अगर मेरी आग कूड़ा-करकट जलाकर भस्म कर दे तो मैं अच्छा जीवन पाउँगा। –खलील जिब्रान

मोबाइल बच्चों की जिज्ञासा, आत्मविश्वास और रचनात्मकता खत्म कर रहा है

बच्चों की सफलता और श्रेष्ठता की चाहत प्रत्येक माता-पिता को होती हैं। और उसके लिए वह हर संभव प्रयास भी करते हैं। उनके प्रयास सार्थक हों और बच्चे उनके अनुरूप सफलता प्राप्त करें, इसके लिए वे कोई कोर-कसर नहीं छोड़ते। बच्चों की परवरिश में माता-पिता जी जान लगा रहे हैं। अपने बनाए लक्षय की पूर्ती के लिए उनके जीवन का पूरा नक्शा भी अधिकतर हम ही बनाते हैं। अपने सपनों को पूरा करने के लिए बच्चों को गलतियां करने दें, खूब खेलने दें, खूब पढ़ने-लिखने दें। और फिर उन्हें अपना रास्ता आपके माध्यम से खुद तलाशने दीजिए। हर समय हम चिंतित रहते हैं कि उनका बच्चा वर्तमान समय में हर क्षण का सदुपयोग नहीं कर रहा हैं। यह माता-पिता के लिए चिंता का विषय भी बना हुआ हैं। हमारा बच्चा अधिकतर समय मोबाइल कि दुनिया में खोया रहता हैं। मैं अनेक स्कूलों में जब अपनी बात रखने जाता हूं, तो अध्यापिकाएं चिंतित होते हुए सवाल करती है कि कैसे बच्चों से मोबाइल छुडवाया जाए। उन्हें इसका उपाय किसी सिरे से दिखाई नहीं देता। और मुझसे उसका निराकरण करने का आठाह भी करती हैं। मैं भी मानता हूं बच्चों के मोबाइल देखने की प्रवृत्ति से माता-पिता चिंतित हैं। लेकिन मेरा यह मानना है कि वह केवल चिंतित है चिंतन नहीं कर रहे। कैसे बच्चों को मोबाइल से दूर किया जा सके, इस पर वह थोड़ा बहुत चिंतन कर ले तो बच्चे मोबाइल से दूर हो सकते हैं। बच्चों को मोबाइल से चिपके रहने में माता-पिता और विद्यालय दोनो का बड़ा योगदान हैं। इस पर चिंतन-मनन करने से बच्चों को मोबाइल से दूर किया जा सकता हैं।

पिछले दिनों मैं कुछ अभिभावकों से बात कर रहा था, उन्होंने तर्क दिया की बच्चों का होमवर्क मोबाइल पर आता है। इसलिए बच्चों को मोबाइल देना पड़ता हैं। बदलते समय में स्कूल प्रशासन को गंभीरतापूर्वक सोचना होगा कि यह प्रवृत्ति उचित नहीं हैं। इस पर रोक लगाई जानी चाहिए अगर हम थोड़ा पीछे जाएंगे तो प्रत्येक बच्चें की अभ्यास पुस्तिका में अध्यापक अपने हाथ से होमवर्क लिखते थे, अथवा ब्लैक बोर्ड पर लिख देते, जिससे प्रत्येक बच्चा अपनी अभ्यास पुस्तिका में गृहकार्य उतार लेता।

स्कूल प्रशासन को इस विषय पर गंभीरता से मंथन करना होगा। क्योंकि बच्चे जब मोबाइल से होमवर्क करने लगते हैं तो वह अपने दिमाग और पुस्तक को काम में नहीं लेते और सीधे गूगल बाबा से सवाल का उत्तर प्राप्त करते हुए अभ्यास पुस्तिका में लिख डालता हैं जो बच्चों को आगे बढ़ने और सोचने-समझने की पृवर्ती से पूरी तरह बाधित करता हैं।

बच्चे जितना अधिक मोबाइल से चिपके रहेंगे, वह सुनना, कहना और बातें करना भी कम कर देंगे। उनकी जिज्ञासा आत्मविश्वास और रचनात्मकता खत्म होने लगेगी। और तो और मोबाइल के कारण सामाजिक और भाषाई विकास से भी वंचित रहेंगे। इस समस्या के समाधान में हमारे अध्यापक और स्कूल प्रशासन इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं

बच्चे जितना अधिक मोबाइल से चिपके रहेंगे, वह सुनना, कहना और बातें करना भी कम कर देंगे। उनकी जिज्ञासा आत्मविश्वास और रचनात्मकता खत्म होने लगेगी। और तो और मोबाइल के कारण सामाजिक और भाषाई विकास से भी वंचित रहेंगे। इस समस्या के समाधान में हमारे अध्यापक और स्कूल प्रशासन इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मोबाइल की प्रवृत्ति को रोकने में स्कूल को भी धैर्य से मंथन करना होगा।

माता-पिता खुद भी बच्चों के मोबाइल की प्रवृत्ति को अधिक बढ़ा रहे हैं, छोटे बच्चों को खाना खिलाते समय, बच्चा अगर रो रहा है तो मोबाइल देकर के चुप कराने की प्रारंभिक प्रवृत्ति ही खतरे की घंटी बजा रही है। मोबाइल की दुनिया में बच्चों को इतना अधिक गोता लगाया जा रहा है, जिसका निराकरण ऐसा ना हो कि बच्चा डूबता ही चला जाए। न तो घर के आंगन में बचपन की किलकारी सुनाई दे रही है और ना बचपन उछल-कूद कर रहा हैं। बच्चें गौडाळिया भी नहीं चल रहे । बच्चों का बचपन मोबाइल तक सिमट कर रह गया हैं।

जब बच्चा बड़ा होता है, स्कूल जाने लगता है, घर आते ही खाने के समय मोबाइल और वहा पर माता-पिता भी उसके पास बैठे हुए अपना मोबाइल चलाते रहते हैं। अनेक बार माता-पिता को पता ही नहीं चलता कि बच्चा मोबाइल देखते-देखते किस दुनिया में चला गया है, कौन सी पिक्चर देख रहा है, कौन सी रील देख रहा है। धीरे-धीरे यह समस्या बड़ा रुप धारण कर लेती है।

इसका निदान यह हो सकता है कि जब बच्चा घर में हो उस समय माता-पिता खुद भी मोबाइल ना देखें, मोबाइल पर बात बहुत अधिक जरूरी हो तभी करें, क्योंकि हम ऐसी स्थिति में बच्चों को विद्रोही भी बना देते हैं, जब बच्चा यह कहने लगता है कि आप भी तो हर समय मोबाइल देखते हैं।

बच्चें प्यार की भाषा समझते हैं। मेरी दादी कहां करती थी की भूख किसी की सगी नहीं होती, जब भूख लगेगी तो वह स्वयं रोटी मांगेगा। माता-पिता को थोड़ा ना कहना भी सीखना होगा। बेहतरीन पैरेंट्स बनने की अगर कोशिश की जाए तो बच्चों को मोबाइल के लिए ना कहना चाहिए, वर्तमान दौर में असल चुनौती पेरेंट्स की यही है कि वह बच्चों को मोबाइल की दुनिया से दूर कैसे करे। पहले खुद भी ऐसे समय मोबाइल का उपयोग करें जब बच्चे घर में न हो ।

जब बच्चें घर में हो तो उनके साथ खेले, उनसे खूब बतियाएं, एक दूसरे के अनुभव से रूबरू हो।

धैर्य और अनुशासन से परवरिश स्वाभाविक होती है। हम उसके साथ स्कूल की बातों को सुने, उनके दोस्तों की बातों को सुने, उनको पार्क में ले जाएं, खेल मैदान में ले जाएं। अनेक बार तो हम बच्चे को खेल के मैदान में ले जाते हुए बच्चों को मैदान में छोड़कर हम खुद मोबाइल की दुनिया में खो जाते हैं। अगर हमें हमारे बच्चे को स्वाभाविक रूप से विकसित करना है तो हम भी पहले मोबाइल की दुनिया में गोता लगाना कम करें तभी इस प्रवृत्ति पर रोक लगाई जा सकेगी।

बच्चों के चरित्र निर्माण में माता-पिता ही वास्तविक रूप से काम करते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र जोशी,
साहित्यकार-शिक्षाविद

राशिफल गुरूवार 10 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 12:25 तक, वृद्धि योग सायं 6:59 तक, कौलव करण दिन 11:58 तक, चन्द्रमा सायं 7:05 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 12:25 से आरम्भ होगा। आज प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:46 तक, चर 10:54 से 12:28 तक, लाभ-अमृत 12:28 से 3:36 तक, शुभ 5:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:44

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों पर प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से सम्पन्न होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वर्तमान समय में भगवान महावीर के सिद्धांतों की प्रासंगिकता –2

भागचन्द जैन मित्रपुरा

(गतांग से आगे जारी.....)

उत्तम सत्य वचन मुख बोले, सो प्राणी संसार न डोले। सत्य वचन बोलने वाले का आत्म कल्याण निश्चित है, वह संसार में आवागमन से मुक्ति का पात्र बन जाता है। जैन दर्शन में सत्य का अर्थ मात्र ज्यों का त्यों बोलने का नाम नहीं है, बल्कि हित-मित-प्रिय वचन बोलने से है। हितकारी वचन यानि जिसमें जीव मात्र की भलाई हो, कहने का अभिप्राय ये है कि जिन वचनों से यदि किसी जीव का अहित होता हो तो वे वचन सत्य होते हुये भी असत्य के बराबर ही है।

5. अचौर्य – अचौर्य का सीधा अर्थ है चोरी नहीं करना। किसी वस्तु को भौतिक रूप से चुराने से ही नहीं है, बल्कि व्यक्ति की गलत भावना, प्रयोजन, इरादा भी है। बिना पूछे किसी की वस्तु का उपयोग भी चोरी की श्रेणी में आता है। टैक्स चोरी, जमाखोरी, मिलावट छात्र द्वारा परीक्षा में नकल करना, डिजिटल उपकरण का प्रयोग करना आदि सभी चोरी करना ही है। लालच एवं लोभ से चोरी करने की आदत बलवती होती जाती है। यदि सभी लोग चोरी करने लगे तो यह समाज ही नष्ट जायेगा। चोरी करना अपराध ही नहीं, पाप भी है।

6. अपरिग्रह – अपनी जरूरी आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करने की भावना रखना या संग्रह नहीं करना को अपरिग्रह कहा गया है। अपरिग्रह भावना से अहिंसा एवं जरूरतमंद के प्रति दया, परोपकार की भावना स्वतः जागृत होती है। संसार में किंचित मात्र भी मेरा कुछ नहीं है, यह भावना अपरिग्रह का अंग है। शास्त्रों में कुल चौबीस प्रकार के अपरिग्रह माने गए हैं। भगवान महावीर का अपरिग्रह सिद्धान्त सीमित संसाधनों के साथ जीवन यापन करना सिखाता है।

7. ब्रह्मचर्य – या ब्रह्मिण स्वात्मनि शुद्धबुद्धे चर्या परद्रव्यमुचप्रवृत्तिः तद् ब्रह्मचर्यम। पर द्रव्यों से रहित शुद्धबुद्ध अपनी आत्मा में जो चर्या अर्थात् लीनता होती है, उसे ब्रह्मचर्य कहते है। साधु संतो को सर्वथा स्त्री संसर्ग का त्याग एवं गृहस्थों के लिए स्वपत्नी संतोष व्रत ही व्यवहार में ब्रह्मचर्य है। महावीर स्वामी ब्रह्मचर्य को तपस्या में एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते थे। महावीर के अनुसार जो ब्रह्मचर्य का कड़ाई से पालन करते है, वे मोक्षमार्ग की और बढ़ते है।

8. अनेकांतवाद – स्यादवाद : इस संसार में प्रत्येक वस्तु अनेकांतात्मक है। प्रत्येक वस्तु में अनेक गुणों और धर्मो का समावेश होता है। प्रत्येक वस्तु प्रतिक्षण गतिमान एवं परिवर्तनशील है। उसके रूप, भाव, आकार तथा परिमाण में प्रतिपल न्यूनाधिक परिवर्तन होता रहता है। ¬

9. क्षमा- तीर्थंकर महावीर ने क्षमा को मनुष्य की आत्मा का स्वाभाविक धर्म कहा है। उसके विभाव रूप परिणाम से ही जीव क्रोधी हो जाता है। क्रोध आत्मा का स्वभाव नहीं हो सकता। क्रोध को कम करना या छोड़ना क्षमा है। क्षमा करने एवम मांगने से अपनी आत्मा की शुद्धि होती है। मनमुटाव, कटुता, बदले की भावना दूर हो सकती है। ऐसा होने पर मानव अपने कर्तव्य पथ पर निडर होकर आगे बढ़ सकता है।

10. महावीर जीवन ने जीने की कला की तरह ही मृत्यु को एक उत्सव में परिवर्तित कर दिया। संलेखना आत्महत्या नहीं, मोक्ष की साधना है। हम अंतिम लक्ष्य संलेखना के माध्यम से अपनी जीवन यात्रा निर्वहन का संकल्प लेकर धर्म की पराकाष्ठा की ओर बढ़ सकते है।

1. विभिन्न देशों के बीच युद्ध एवं तनाव : रूस- यूक्रेन, इजराइल-हमाश, लेबनान, ईरान आदि के बीच जारी युद्ध, चीन-ताइवान, उत्तरी कोरिया – दक्षिणी कोरिया, भारत – चीन, पाकिस्तान आदि विश्व के विभिन्न देशों के बीच जारी तनाव को दूर करने का एक मात्र उपाय महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, क्षमा के सिद्धांत को समझना एवं क्रियान्वित करना है। युद्ध से विनाश के अतिरिक्त कोई उपलब्धि नहीं मिलने वाली है। इस सिद्धांत के अनुसार अब कई देश शांति की ओर अग्रसर होने का प्रयास कर रहे है।

2. सम्प्रदायवाद एवं आतंकवाद वैश्विक शांति के समक्ष सबसे बड़े अवरोधक हैं। विविध प्रकार की आतंकी गतिविधियों से दुनिया के किसी न किसी कोने में हर रोज अस्थिरता देखने को मिलती है। अपना देश इसका सटीक उदाहरण है। मुंबई, पठानकोट, कश्मीर, जयपुर, पुलवामा आदि एवं अमेरिका सहित अन्य देश भी आतंकवाद का शिकार है। महावीर के सिद्धांत मन मस्तिष्क, हृदय परिवर्तन करने में सक्षम है।

3. असंतुलित आर्थिक विकास भी संपूर्ण विश्व के समक्ष एक प्रमुख चुनौती है। विश्व के कुछ ही देश विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आते है। कई देशों में भुखमरी, कुपोषण की विकराल समस्या है। महावीर का सर्वोदयी एवं अपरिग्रह का सिद्धांत इन सब से निपटने में कारगर है। संपन्न एवं आधिक्य परिसंपत्ति वाले देश जरूरत मंद देशों की आवश्यक सहायता कर अपने समकक्ष लाने का प्रयास कर सकते है एवं विश्व समृद्धि एवं शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते है।

4. स्वास्थ्यपूर्ण जीवन शैली की समस्या महावीर के अहिंसा के सिद्धांत से शाकाहार, योग ध्यान द्वारा शारीरिक एवम मानसिक रूप से स्वास्थ्यपूर्ण जीवन जिया जा सकता है। पहला सुख निरोगी काया है। कोरोना काल में महावीर के सिद्धान्त व जैन जीवन शैली पूर्णतया कारगर रही है।

5. पर्यावरण एवं प्रदूषण की समस्या जल, वायु, ध्वनि, मृदा प्रदूषण वैश्विक स्तर पर बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण हम जानते है कि वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। जगह-जगह ग्लेशियर पिघल रहे है, महा सागरो का जल स्तर बढ़ रहा है।

6. महामारियों से बचाव- कोविड, बर्ड फ्लू, मैड काऊ एड्स आदि महामारियो से बचाने का उपाय महावीर के सिद्धांतो में निहित है। ये सब बीमारियां, महामारियां मांसाहार की देन है। अहिंसा, शाकाहार, संयम, ब्रह्मचर्य का पालन करने से हम इन सब आपदाओं, विपत्तियों से विमुक्त हो सकते है।

7. संयुक्त परिवारों के विघटन की समस्या : बढ़ते अनाचार एवं व्यभिचार से संयुक्त परिवार के माध्यमं से सहज ही नियंत्रण हो जाता है। अपने जन्म दाता माता पिता की वृद्धावस्था में आसानी से देखभाल हो जाती है। महावीर द्वारा देव शास्त्र गुरु की पूजा की शिक्षा दी जाती है। प्रथम गुरु हमारे माता पिता ही होते है। संयुक्त परिवार में रहकर हम अपनी संस्कृति की रक्षा भी कर सकते है।

8. धर्म में विघटन एवं शिथिलता : आज श्रावक एवं श्रमण महावीर के सिद्धांत से विमुख होते जा रहे है। सभी की चर्यायों में शिथिलता घर कर गई है। दिखावा, आडंबर अपनी चरम पर है। महावीर के सिद्धांत पालन में श्रावको द्वारा छट आवश्यक, सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों का पालन दूर की कोड़ी हो गया है।

9) जैन धर्म स्थल, तीर्थ क्षेत्र, पुरातन धरोहर अभी सब खतरे में दिखाई दे रहे है। श्री सम्मेद शिखर जी, गिरनार जी, पांवागढ, केसरियाजी, खारवेल की गुफाएं, ग्वालियर मंदिर आदि क्षेत्र पर विघटनकारी शक्तियां अपना कार्य कर रही है। हमे महावीर के सिद्धांतो की पालना करते हुए इन सब समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। सिद्धांतों के साथ समझौता वादी प्रक्रियाओं का स्कोप नहीं है। इनके पालन से अन्य धर्म स्थल भी सुरक्षित रह सकते है। आपसी सद्भावना का वातावरण पनप सकता है।

10) जैन संस्थाओं, ट्रस्ट कमेटियों में व्याप्त शिथिलाचार, धर्म प्रभावना में बाधक है। दिगंबर मुनियों से ही जैन धर्म की पहचान है। उनके आहार, विहार, प्रवास, निहार की समुचित व्यवस्था में कोताही बरती जा रही है। इसी तरह समाज के जरूरतमंदो के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, खानपान की समुचित व्यवस्था नहीं है। महावीर के सिद्धांत हमे इस बारे में सही रास्ता दिखा सकते है। अन्य धर्मों की संस्थाएं भी इन्हे अपना सकती है।

11. आज सामान्य व्यक्ति का जीवन इस प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में चुनौतीपूर्ण हो गया है। छोटी-छोटी बातों से लोग एक दूसरे के दुश्मन बन रहे है। महावीर का क्षमा का, अपरिग्रह का, अनेकांतवाद का सिद्धांत अपनाकर ही सब कठिनाइयों का निवारण आसनी से किया जा सकता है।

12. मानव अधिकारों का उलंघन : बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। लेकिन महावीर के सिद्धांत सर्वोदय का संदेश देते है, जिसमे न केवल मानव को, बल्कि जीवमात्र के संरक्षण की भावना व्यक्ति गई है।

13. महावीर से पूर्व शूद्रों को निम्न स्थान प्राप्त था। नारी की भी स्थिति हीन थी, उसके लिए साधना के मार्ग बंद थे। महावीर स्वामी ने कठोर वर्ण व्यवस्था का प्रतिकार किया। उन्होंने शुद्र साधु को संघ में स्थान दिया और चंदनबाला जैसी नारी को न केवल दीक्षित किया वरन साध्वी संघ का नेतृत्व भी सौंपा। भारत जैसे देश में जातिप्रथा एवं कट्टरवाद, धर्म, संप्रदाय के नाम पर अशांति अभी भी फैलाई जाती है। महावीर के समता सिद्धांत को स्वीकार करके वसुदेव कुटुंबकम की धारणा मूर्त रूप ले सकती है। भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति की दिशा में इन सिद्धांतों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्रियों के उत्थान के लिए दासता, सामाजिक समता, समान दर्जा आदि के लिए शुरूआत की। वर्तमान में महिला सशक्तिकरण के साथ पर्यावरण संरक्षण-ग्लोबल वार्मिंग से बचाव, स्वच्छता, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जनसंख्या नियन्त्रण जैसे अभियानों के संदर्भ में भगवान महावीर के सिद्धांत अत्यधिक प्रासंगिक हो गये है।

14. महावीर ने अणु, परमाणु, जीव, अजीव, पुद्गल की अवधारणा को बहुत पहले ही विस्तृत रूप से प्रस्तुत कर दिया था। उन्ही सिद्धांतों को पीटर हिग्स ने हिग्स बोसन यानी मूलकण जिसे गॉड पार्टिकल कहा गया, के रूप में अपने आविष्कार के तौर पर बताया। महावीर के दिए गए उपदेश से हम आधुनिक विज्ञान की दिशा में और आगे बढ़ सकते है, विश्व का मार्ग दर्शन कर सकते है।

15. महावीर के सिद्धांत में व्यक्ति पूजा की जगह नहीं है, गुणों की ही पूजा की जाती है। णमोंकर मंत्र में पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया जाता है, जिन्होने अपने आंतरिक शत्रु काम, क्रोध, माया, लोभ आदि का नाश कर दिया है। गुणों की आराधना करने में किसी को कोई संशय नहीं सकता है। सही अर्थ में महावीर के सिद्धांत जैन धर्मावलंबियों के लिए ही नहीं है, सभी के लिए है, जन-जन के लिए है। जीवन की इस आपाधापी में महावीर का मार्ग ही सही मार्ग है। महावीर के सिद्धांत सार्वभौमिक, सर्वमान्य, सर्व हितेषी है। आज विश्व की, देश की, समाज की, परिवार की, व्यक्ति की किसी भी समस्या का समाधान महावीर के सिद्धांतो में ही निहित है। विनोबा भावे ने महावीर का सर्वोदय शब्द अपनाया। सर्वपदाम अंतकरम निरंतरम, सर्वोदयम तीर्थ मिदम तवैव। जिसमे सबका अभ्युदय है, वह मेरा अभ्युदय है, इसलिए उसका नाम सर्वोदय रखा। सब दुखों का अंत करता है, सार्वभौम धर्म है मेरा।

वीर निर्वाण संवत् सबसे प्राचीन संवत्

तीर्थंकर महावीर की स्मृति में वीर निर्वाण सम्वत, भगवान महावीर के निर्वाण के अगले दिन से ही 2551 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ। यह विश्व में सबसे प्राचीन सम्वत है एवम् प्रचलन में है। इससे जैन धर्म संस्कृति की प्राचीनता का आंकलन किया जा सकता है। भगवान महावीर का 2624वां जन्म कल्याणक वर्ष बिना किसी आडंबर, अहिंसा सहित सभी पांच अणु/महाव्रतों का का पालन करते हुए, मनोयोग से मनाए जाने की नितांत आवश्यकता है।

संकलन--भागचंद जैन मित्रपुरा,
पूर्व सहायक महा प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक; अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर; पूर्व कंसल्टेंट एसबीआई लाइफ

आज पूरी दुनिया में होम्योपैथी की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है

डॉ. राम

"अच्छा स्वास्थ्य जीवन में किया जाने वाला सबसे अच्छा दीर्घकालिक निवेश है, होम्योपैथी के साथ अपने अच्छे स्वास्थ्य में निवेश करें।" होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के जनक डॉ. क्रिश्चियन फेडरिक सैमुअल हैनिमैन की जयंती पर होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. राम होम्योपैथ चिकित्सक ने बताया कि होम्योपैथी की शुरुआत वर्ष 1796 में डॉ. सेमुअल हैनिमैन सर ने जर्मनी में की थी।

इस दिन को होम्योपैथी के संस्थापक डॉ. सैमुअल हैनिमैन की जयंती के रूप में भी जाना जाता है। आज पूरी दुनिया में लोग होम्योपैथी दवाओं पर भरोसा कर रहे हैं और उसके जरिए अपनी सेहत संबंधी- समस्याओं का उपचार करवा रहे हैं। विश्व होम्योपैथी दिवस 2025 का विषय अनुसंधान को सशक्त बनाना, दक्षता बढ़ाना एक होम्योपैथी संगोष्ठी है।

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में शरीर की स्वयं को ठीक करने की जन्मजात क्षमता में विश्वास है। लाइलाज बीमारियों का पूरी तरह सफल इलाज में पौधों और खनिजों जैसे प्राकृतिक तत्व शामिल होते हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि उनमें अंतर्निहित उपचार गुण होते हैं। विश्व के कई देशों में इसका उपयोग होता है। लेकिन भारत इसमें अग्रणी है। होम्योपैथी भी एलोपैथी एवं आयुर्वेद की तरह चिकित्सा सुविधा देती है। यह काफी सस्ती है इस पर लोगों का भरोसा इसलिए भी है क्योंकि इसके साइड इफेक्ट की संभावना नहीं है और ठीक होने की जड़ से हैं। होम्योपैथी की लोकप्रियता आज तेजी से बढ़ रही है और प्रचलित एलोपैथिक चिकित्सा पद्धित के बाद विश्व मे दूसरे स्थान पर पसन्द एवं प्रचलन में लायी जाने वाली होम्योपैथी चिकित्सा पद्धित है। यह रोगों को जड़ से दूर करती है। सबसे बड़ी बात यह कि होम्योपैथी के साइड इफेक्ट्स न के बराबर होते हैं। होम्योपैथी में कारण के पीछे कारण छुपा रहता है उस को जड़ से खत्म कर देती हैं।

करोना जैसी भयंकर महामारी में होम्योपैथी रामबाण साबित हुई। भारत सरकार भी अब इस चिकित्सा पद्धित पर काफी ध्यान दे रही है। इसे भी आयुष मंत्रालय के अंतर्गत जगह दी गयी है। होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धित आज अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी में काफी मशहूर है, लेकिन भारत इसमें वर्ल्ड लीडर बना हुआ है। यहां होम्योपैथी डॉक्टर की संख्या ज्यादा है तो होम्योपैथी पर भरोसा करने वाले लोग भी ज्यादा है।

"और हमारी एक पल मानवता की और सेवाएंम,"
"हर घर घर होम्योपैथी"

डॉ. राम
होम्योपैथी चिकित्सा केंद्र एंड रिसर्च सेंटर जयपुर (राज.)

प्रदेशभर के पहलवान कोटा पहुंचे, दंगल आज से

राज्य स्तरीय अण्डर-20 कुश्ती प्रतियोगिता में खिताब पाने के लिए दंगल आज से होगा

कोटा, (निसं)। राज्य स्तरीय अण्डर-20 कुश्ती प्रतियोगिता में खिताब पाने के लिए दंगल आज से प्रारंभ होगा। आयोजन में भाग लेने के लिए प्रदेशभर से महिला और पुरूष पहलवान बुधवार को कोटा पहुंच गए।

कोटा जिला कुश्ती संघ के सचिव हरीश शर्मा ने बताया कि राज्य स्तरीय अंडर-20 कुश्ती प्रतियोगिता का उद्घाटन गुरूवार को राज्य कुश्ती संघ के अध्यक्ष राजीव दत्ता करेंगे। नयापुरा स्थित रघुराई एंडो स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित इस प्रतियोगिता में पुरूष वर्ग में फ्री स्टाइल और ग्रीको रोमन तथा महिलाओं के कुश्ती के मुकाबले होंगे। तीन ही वर्गों में वजन की 10-10 कैटेगरी रखी गई हैं और गुरूवार और शुक्रवार को 15-15 वजन कैटेगरी के फाइनल तक के मुकाबले होंगे।

उन्होंने बताया कि विभिन्न वजन कैटेगरी के विजेता पहलवान राष्ट्रीय अंडर-20 कुश्ती प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगे। इस बीच राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता की तैयारियों को बुधवार को अंतिम रूप दिया गया। पहलवानों का कोटा पहुंचने का सिलसिला बुधवार सुबह से ही प्रारंभ हो गया। इनमें अनेक ऐसे पहलवान भी हैं जो राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धाओं में भाग ले चुके हैं। खिलाड़ियों के साथ आए कोच और रेफरियों के लिए क्लिनिकल सैशन भी आयोजित किया गया जिसमें उन्हें प्रतियोगिता में लागू किए गए कुश्ती के नए नियमों की भी जानकारी दी गई।

कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पहलवानों ने रजिस्ट्रेशन करवाया।

पर्यवेक्षकों ने भी देखी व्यवस्थाएं :-प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए अध्यक्ष राजीव दत्ता के निर्देश पर राज्य कुश्ती संघ ने भी उच्च स्तर के तकनीकी अधिकारियों की नियुक्ति की है। राज्य कुश्ती संघ की ओर से नियुक्त किए गए पर्यवेक्षकों ने भी बुधवार को रघुराई एंडो स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का दौरा किया तथा आयोजन समिति के अध्यक्ष और राजस्थान में कुश्ती के वरिष्ठ संरक्षक आईके दत्ता के नेतृत्व में कार्य कर रही पांच समितियों से फीड बैक लिया।

■ अनेक ऐसे पहलवान भी हैं जो राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धाओं में भाग ले चुके हैं

खिलाड़ी मांग सकेंगे डीआरएस :-प्रतियोगिता में निष्पक्षता के लिए राज्य कुश्ती संघ ने विशेष इंतजाम किए हैं। आयोजन के दौरान होने वाले सभी मुकाबलों की दो कैमरों से वीडियो रिकॉर्डिंग की जाएगी। मैच के दौरान किसी अंक को यदि पहलवान चैलेंज करता है तो उसी समय रिकॉर्डिंग देख कर एक विशेष टीम रैफरी के निर्णय की समीक्षा करेगी।

गर्मी को देखते हुए विशेष इंतजाम :-गर्मी के तीखे तेवर देखते हुए आयोजन समिति ने खिलाड़ियों के लिए विशेष इंतजाम किए हैं। रघुराई एंडो स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में विभिन्न स्थानों पर मिस्ट फेन और बड़ी संख्या में कूलर लगाए जा रहे हैं। प्रतियोगिता के दौरान पूरे समय मेडिकल टीमें और एम्बूलेंस भी तैनात रहेंगी।